भूमि सुपोषण एवं संरक्षण हेतु राष्ट्र स्तरीय जन अभियान

किसान भाईयों और बहनों,

नमस्कार।

हमें आशा है कि यह वर्ष आपके लिए, आपके परिवार के लिए एवं आपकी खेती के लिए लाभदायक रहा होगा।

भारत में खेती हजारों वर्षों से हो रही है। इसका प्रमाण हमें कृषि पाराशर जैसे प्राचीन वैदिक ग्रंथों से मिलता है। हमारी भूमि का पोषण फसलों के अवशेष, पेड़ों के पत्ते, गोबर, गोमूत्र, प्राणियों के अवशेष इत्यादि से होता रहा है। हमारी खेती हमेशा अपने परिसर में उपलब्ध साधनों पर आधारित रही है। हमारी खेती का एकमात्र उद्देश्य अधिक उत्पादन कभी नहीं था। हमारे किसानों का प्रकृति के प्रति, अन्य जीवों के प्रति हमेशा बंधुभाव रहा है। किन्तु साठ वर्ष पहले, १९६० के दशक में हमारी खेती ने एक नया मोड़ लिया। गोबर-गोमूत्र के आधार पर चलने वाली, परम्परागत ज्ञान एवं मान्यताओं पर आधारित हमारी खेती पूरी तरह आधुनिक रासायनिक खेती बन गई। वर्तमान में हमारी भूमि की अधिकतर समस्याएं इस नए मोड़ के बदलाव के साथ जुड़ी हुई हैं। भूमि सुपोषण एवं संरक्षण हेतु राष्ट्र स्तरीय जन अभियान इसी संदर्भ में लिया गया है।

इस पत्र द्वारा हम आपको भूमि सुपोषण एवं संरक्षण हेतु राष्ट्र स्तरीय जन अभियान की महत्वपूर्ण जानकारी देना चाहते हैं। इस अभियान का प्रारंभ भारतीय प्राकृतिक पद्धति से खेती करने वाले किसान, संस्थाए और किसानों के हित में कार्यरत संगठनों ने मिलकर किया है। जन अभियान का मुख्य उद्देश्य भूमि सुपोषण के संदर्भ में किसानों से एवं सामान्य जनों से संपर्क करना है। जो किसान भूमि सुपोषण के प्रत्यक्ष प्रयत्न कर रहे हैं उनसे सीखना और अन्य इच्छुक किसान भाई-बहनों को भूमि सुपोषण के लिए प्रेरित करना भी जन अभियान में अपेक्षित है।

भूमि सुपोषण क्या है ?

भूमि सुपोषण हमारे भारत देश में हजारों वर्षों से अपनाई जाने वाली खेती की परंपरा है। किसानों की अनेकों पीढियों ने भूमि को अपनी माता समान मानकर उसके सुपोषण के प्रति जागरुकता बरती है। भारतीय किसानों ने देशी गाय का गोबर, गोमूत्र, फसलों के अवशेष से तैयार किया हुआ खाद व अन्य कई देशी तरीकों से अपनी भूमि की उर्वरता, उपजाऊपन को बनाये रखा है। भूमि को कुछ समय खाली रखना, विश्रांति देना, फसल के अवशेषों को मिट्टी मे मिलाकर पोषक तत्वों को पुनः स्थापित

करना इत्यादि सुलभ एवं प्रभावी पध्दतियाँ भूमि सुपोषण के लिए अपनाई जाती हैं। पारंपरिक भारतीय कृषि चिंतन के अनुसार हमें भूमि का शोषण नही, पोषण करना है।

भूमि सुपोषण एवं संरक्षण हेतु राष्ट्र स्तरीय जन अभियान की आवश्यकता क्यों है?

भारत में भूमि की स्थिति चिंताजनक है। यदि आप पिछले दस वर्षों से लगातार रासायनिक खाद, रोग-कीटनाशक एवं खरपतवार नष्ट करने के लिए आधुनिक रसायनों का उपयोग कर रहे हैं तो आप भी निश्चित रूप से भूमि की चिंताजनक स्थिति अनुभव कर रहे होंगे। उर्वरता की कमी, मिटटी का सख्त होना, मिटटी बहकर जाने की बढ़ती मात्रा, प्रतिवर्ष रासायनिक खाद की बढ़ती मात्रा इत्यादि भूमि का स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण हैं।

स्वतन्त्रता के बाद हमारे देश में अनाज का उत्पादन कम पड़ रहा था। जितनी जनसंख्या थी, उसके अनुपात में उत्पादन नहीं था। १९६० के दशक में सरकार ने आधुनिक रासायनिक खेती को बढ़ावा देने की नीति अपनाई। इस नीति का एकमात्र लक्ष्य था अनाज का उत्पादन बढ़ाना। इस नीति के अनुसार गेहूं और धान के अधिकाधिक उत्पादन के लिए रासायनिक खाद, रोगनाशक, कीटनाशक एवं बीज लाए गए।

आधुनिक रासायनिक खेती में गोबर खाद की जगह रासायनिक खाद ने ले ली। आधुनिक रासायनिक खेती के पूर्व, इलाके मे, गांवों मे हरएक फसल के अनेक किस्म होते थे। लगभग यह स्थिति होती थी कि जितने गांव उतने बीजों के किस्म । आधुनिक रासायनिक खेती में इस विविधता की जगह एक समान, छोटा कद और अधिक दाने देने वाले आधुनिक बीजों के कुछ गिने-चुने किस्मों ने ले ली। पारंपरिक खेती में प्राकृतिक तरीकों से खरपतवार, रोग और कीटों पर काबू पाया जाता है। आधुनिक रासायनिक खेती में प्राकृतिक तरीकों की जगह खरपतवार एवं रोग-कीट का सम्पूर्ण नाश करने वाले रसायनों का प्रयोग किया जाता हैं। ये रासायनिक तरीके आज भी सबने अपनाये हुए हैं। यह मानना उचित होगा कि पिछले साठ वर्षों में हमारी मूल पध्दतियाँ व तरीके ही नहीं, दृष्टिकोंण भी बदला है। आधुनिक खेती का एकमात्र उद्देश्य "अधिकाधिक उत्पादन" हो गया है।

आधुनिक रासायनिक तरीकों से हमारे अन्न उत्पादन में निःसंदेह आवश्यक बढ़ोतरी हुई किंतु आज हमारे देश में अन्न उत्पादन की समस्या नहीं है। जिस तीव्र गति से हमारा अनाज उत्पादन बढ़ा है उतनी ही तेजी से हमारी भूमि निर्बल हुई है।

सिर्फ उत्पादन पर ध्यान देने से भूमि को बहुत हानि हुई है। सामान्य किसान की आज स्थिति यह है कि अधिकाधिक उत्पादन की होड़ में प्रत्येक वर्ष लागत खर्च बढ़ रहा है। उत्पादन उस मात्रा में बिल्कुल नहीं बढ़ पाता। यह स्थिति संपूर्ण देश में है।

पिछले साठ वर्षों में आधुनिक रसायनों के एवं पानी के असंतुलित उपयोग से हमारी मिटटी कठोर हुई है। मिटटी में पानी की मांग बढ़ी है। मिटटी में सहज पाए जाने वाले केंचुए तथा मित्र जीवों की संख्या नहीं के बराबर हो गई है। खरपतवार तथा मित्र कीटों को नष्ट करने से अन्य उपयोगी जीवों की, पक्षियों की संख्या भी कम हुई है। आधुनिक रासायनिक खेती की मांग होती है कि सघन पद्धति से एक ही फसल करें। इसमें बहु-फसल पध्दति को अनदेखा किया गया है। इससे अपनी कई पारंपरिक तिलहनी, दलहनी फसलें जो कम समय, कम लागत में होती थीं, वह लगभग नष्ट होने के कगार पर हैं।

क्या आपको यह चिंता नहीं हो रही है कि हमारी भूमि की स्थिति बहुत गंभीर है और हमें कुछ करना चाहिए? क्या भूमि के शोषण के बजाय सुपोषण करना चाहिए? यदि आपका उत्तर हाँ है तो बात आगे बढ़ेगी। भूमि सुपोषण एवं संरक्षण का राष्ट्रीय जन अभियान लेने का लक्ष्य 'भूमि का शोषण नहीं, सुपोषण करना' है। इस जन अभियान में पारंपरिक भारतीय कृषि के तरीके जो आज की स्थिति में सिद्ध हों, सफल हों उनको फिर से उपयोग में लाना, बढ़ावा देना, प्रचार-प्रसार करना, जन जागृति करना इत्यादि अपेक्षित है।

अभियान कब और कैसे चलाया जाएगा?

यह जन अभियान चैत्र शु० प्रतिपदा (मंगलवार, १३ अप्रैल २०२१) के पावन अवसर पर शुरू होगा। साढ़े तीन महीने के बाद आषाढ़ शु० पूर्णिमा (शनिवार, २४ जुलाई २०२१) को इस जन अभियान का पहला चरण पूर्ण होगा।

चैत्र शु० प्रतिपदा (मंगलवार, १३ अप्रैल २०२१), प्रातः १० बजे भारत के सभी राज्यों में, जिलों में एवं अधिकाधिक गावों में भूमि पूजन समारोह आयोजित किये जाएंगे। गांव में किसान परिवार सामूहिक रूप से भूमि माता का श्रध्दा भाव से पूजन करेंगे। साथ ही भूमि सुपोषण में अपना योगदान देने का संकल्प भी करेंगे।

अभियान के पहले चरण में प्रशिक्षण, प्रत्यक्ष अनुभव लेने के लिए यशस्वी किसानों से प्रत्यक्ष भेंट वार्ता, जिला के कृषि विज्ञान केंद्र के साथ भूमि सुपोषण मार्गदर्शन इत्यादि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। नगरों में निवास करने वाले भाई-बहन भी इस अभियान मे शामिल होने के लिए अपेक्षित हैं। शहरों में जागरूकता के कार्यक्रम चलेंगे ताकि शहरो के द्वारा भूमि के नुकसान के कारणों को कम किया जा सके। यथा संभव शहरों के लोग अपने मूल गांव मे भी जन अभियान के कार्यक्रमों मे शामिल होंगे।

यह जन अभियान पूर्ण यशस्वी तब होगा जब हर एक किसान उत्पादक परिवार तथा नगरीय क्षेत्र का प्रत्येक उपभोक्ता परिवार भूमि के सुपोषण एवं संरक्षण में जुट जायेगा। आइए एक साथ मिलकर इस

जन अभियान को यशस्वी बनाते हैं। यह अपने राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति, भूमि के प्रति एवं सम्पूर्ण प्राणिमात्र के प्रति हमारा उत्तरदायित्व है।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क :